भक्तिकाल

पूर्वमध्यकाल को भक्तिकाल कहा जाता है। इसका समय विक्रम संवत् 1375 से 1700 विक्रम संवत तक है। भक्तिकाल में धर्म, राज्य तथा लोकाश्रयों में साहित्य सृजन की प्रक्रिया बराबर चलती रही।

भक्तिकाल की दो धारा हुई। सगुण भक्ति 2. निर्गुण भक्ति। दोनों धारा में दो - दो शाखाएँ हुई। सगुण - 1. रामभक्तिशाखा 2. कृष्ण भक्ति शाखा, 2. निर्गुण - 1. प्रेमभक्तिशाखा 2. ज्ञान भक्ति शाखा। प्रेमाश्रयी शाखा के अग्रगण्य जायसी हुए तथा ज्ञानाश्रयी शाखा के अग्रगण्य कबीर दास जी हुए। सगुण भक्ति शाखा में रामाश्रयी शाखा के अग्रगण्य तुलसीदास तथा कृष्णाश्रयी शाखा के अग्रगण्य सूरदास जी हुए।

भक्तिकाल के सामान्य प्रवृत्तियों को लिखे

i. ईश्वर के प्रति उत्कट अनुराग।
ii. गुरु महिमा।
iii. नाम स्मरण की महिमा का बखान।
iv. समानता की भावना।
v. अहंकार का त्याग।
vi. शास्त्र ज्ञान की अपेक्षा लोकानुभव को महत्त्व।
vii. सत्संगति की महिमा
viii. बहुदेववाद का विरोध।
ix. समन्वयवादी भावना।
x. नीतिकाव्य का सृजन।

Scanned with CamScanner

मीराबाई

मेड़ता के शासक रत्नसिंह राठौर की पुत्री मीरा का जन्म 1498 ई० में हुआ था। इनका विवाह राणा सांगा के पुत्र के साथ हुआ था। मीरा कृष्ण भक्ति में लीन रहती थी। उन्होंने कृष्ण भक्ति की कई अनमोल पदों का सृजन किया है जैसे कि -

• मेरे तो गिरधर गोपाल दुसरो न कोई
जा के सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।।

कुलश्री मान मीरा को मारने का प्रयास भी हुए परन्तु भक्ति में डूबी मीरा कृष्ण-प्रेम से तनिक भी डगमग नहीं हुई। शैशव में माता के देहांत हो जाने के कारण इनका पालन पोषण पितामह दादू के द्वारा हुआ जो परम वैष्णव भक्त थे। मीरा के पति का नाम भोजराज था, जिसके देहांत हो जाने के बाद भी कृष्ण को अपना पति मान ली। मीराबाई की रचनाएं हैं - नरसीजी का माहरा, गीतगोविन्द की टीका, मीरानी गरबी, मीरा के पद, रास गोविन्द।

18.7.10

1. रीतिकाल के सामान्य प्रवृत्तियां -

लक्षण ग्रन्थ का निरूपण
शृंगारिकता
अलंकारिकता
ब्रजभाषा की प्रधानता
~~अभिव्यक्ति की अनूठी पद्धति~~
चराश्रय की भावना।
नारी चित्रण
प्रकृति चित्रण
आलम्बन रूप में प्रकृति चित्रण
मुक्तक काव्य

छायावाद के सामान्य प्रवृत्तियां